Content is available at: CRDEEP Journals
Journal homepage: http://www.crdeepjournal.org/category/journals/ijssah/

International Journal of Social Sciences Arts and Humanities
(ISSN: 2321-4147) (Scientific Journal Impact Factor: 6.002)
A Peer Reviewed UGC Approved Quarterly Journal

Research Paper

वैश्वीकरण का प्रभाव : युवा महिलाओं के जीवन-स्तर एवं कार्य-परिस्थितियों का अध्ययन

पूजा[1*] और डॉ. श्रीपाल चौहान[2]
[1]- शोधकर्ता, कला मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की, उत्तराखंड, भारत.
[2]- शोध निर्देशन एवम डीन, कला मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान संकाय, मदरहुड विश्वविद्यालय, रुड़की, उत्तराखंड, भारत.

ARTICLE DETAILS

Corresponding Author:
पूजा

Key words:
वैश्वीकरण, युवा महिलाओं

ABSTRACT

वर्तमान शोध का उद्देश्य शहरी क्षेत्रों में रहने वाली 18–35 आयु वर्ग की युवा महिलाओं के जीवन-स्तर तथा कार्य-परिस्थितियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव का विश्लेषण करना है। अध्ययन के लिए दिल्ली के विभिन्न नगरीय केंद्रों से 150 युवा महिलाओं का नमूना चुना गया। वर्णनात्मक सर्वे पद्धति के अंतर्गत प्रपत्र आधारित साक्षात्कार व प्रश्नावली से सूचनाएँ एकत्र की गईं। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि वैश्वीकरण ने आय, उपभोक्ता-सामग्रियों तक पहुँच और आत्मनिर्भरता में सकारात्मक योगदान दिया है, परन्तु कार्य-तनाव, नौकरी की असुरक्षा तथा परिवार-कार्य संतुलन के प्रति चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। अतः नीति-निर्माण में स्त्री-केन्द्रित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता स्पष्ट होती है।

1. प्रस्तावना

इक्कीसवीं शताब्दी को सामान्यतः वैश्वीकरण की शताब्दी कहा जाता है। सूचना-प्रौद्योगिकी, संचार-क्रांति और मुक्त व्यापार नीतियों ने भौगोलिक सीमाओं को काफी हद तक अप्रासंगिक बना दिया है। वस्तुओं, सेवाओं, पूँजी, विचारों और श्रम का प्रवाह राष्ट्रीय सीमाओं के पार तीव्र गति से हो रहा है। भारत भी इस प्रक्रिया से अछूता नहीं है। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के पश्चात् भारत के आर्थिक-सामाजिक ताने-बाने में व्यापक परिवर्तन हुए। निजी क्षेत्र का विस्तार, सेवा-क्षेत्र की तीव्र वृद्धि, बहुराष्ट्रीय कंपनियों का आगमन और उपभोक्तावाद का प्रसार आदि इन परिवर्तनों के प्रमुख आयाम हैं। वैश्वीकरण एक निरपेक्ष प्रक्रिया नहीं है; यह विभिन्न वर्गों, समूहों और लिंगों पर भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रभाव डालती है। विकास-चर्चा में अब यह प्रश्न प्रमुख हो गया है कि वैश्वीकरण से किसको लाभ हुआ, किसको हानि हुई और किन समूहों के लिए अवसरों तथा चुनौतियों दोनों का मिश्रित स्वरूप सामने आया। इस संदर्भ में महिलाओं की स्थिति अत्यन्त महत्वपूर्ण है, क्योंकि परंपरागत समाजों में वे आर्थिक निर्णय-प्रक्रिया और श्रम-बाजार दोनों में अपेक्षाकृत कमज़ोर स्थिति में रही हैं। भारतीय समाज में महिलाओं की भूमिका सदैव बहुआयामी रही है – वे गृह-प्रबंधक, पोषक, भावनात्मक अनुशासक, सामाजिक-सांस्कृतिक परम्पराओं की वाहक और साथ ही आर्थिक गतिविधियों की सहभागी भी रही हैं। फिर भी, पितृसत्तात्मक संरचना के कारण उन्हें शिक्षा, रोजगार, संपत्ति-अधिकार और निर्णय-शक्ति के मामले में पुरुषों के समान अवसर नहीं मिल सके। बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में शिक्षा विस्तार, महिलाओं के अधिकारों के प्रति संवेदनशील विधिक प्रावधानों तथा नारीवादी आंदोलनों ने स्थिति में परिवर्तन की बुनियाद रखी। वैश्वीकरण ने इस परिवर्तनशील परिदृश्य को नया आयाम दिया।

एक ओर तो सूचना-प्रौद्योगिकी, बीपीओ, रिटेल, पर्यटन, स्वास्थ्य, शिक्षा इत्यादि क्षेत्रों में महिलाओं के लिए नए रोजगार-अवसर उत्पन्न हुए; दूसरी ओर असंगठित क्षेत्र में ठेका-प्रथा, लचीले श्रम-कानून, अस्थायी नौकरी, कम वेतन और प्रतिकूल कार्य-स्थितियों के कारण उनकी असुरक्षा भी बढ़ी। वैश्विक संस्कृति के प्रभाव से उपभोग के नए मानक बने, जिनसे जीवन-स्तर की आकांक्षाएँ ऊँची हुईं, परन्तु सभी के लिए उन्हें प्राप्त करना संभव न हुआ। युवा महिलाएँ, विशेष रूप से शहरी क्षेत्रों की, इस संक्रमणकालीन स्थिति की सबसे सक्रिय वाहक

**Corresponding Author can be contacted at poojakant87@gmail.com*
Received: 01-10-2025; Sent for Review on: 05-10-2025; Draft sent to Author for corrections: 12-10-2025; Accepted on: 20-10-2025; Online Available from 23-10-2025
DOI: 10.5281/zenodo.17798378
IJSSAH-0018/© 2025 CRDEEP Journals. All Rights Reserved.

हैं। वे परंपरागत पारिवारिक अपेक्षाओं और आधुनिक आर्थिक-सांस्कृतिक दबावों के बीच संतुलन साधने का प्रयास करती हैं। उच्च शिक्षा, मीडिया और इंटरनेट ने उनके विचार-विश्व को विस्तृत किया है, परंतु विवाह, मातृत्व, परिवार की जिम्मेदारियाँ और सामाजिक-सांस्कृतिक मान्यताओं के कारण उनकी स्वतंत्रता पर अभी भी कई प्रकार की सीमाएँ हैं। दिल्ली भारत की राजधानी होने के साथ-साथ तीव्र शहरीकरण, विविध सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि और विशाल सेवा-क्षेत्र वाला महानगर है। यहाँ बहुराष्ट्रीय कंपनियों, आईटी-फर्मों, कॉल-सेंटरों, रिटेल मॉल, विश्वविद्यालयों तथा अस्पतालों की संख्या अधिक है। परिणामस्वरूप देश के विभिन्न भागों से युवा महिलाएँ शिक्षा एवं रोजगार के लिए दिल्ली आती हैं। इस शहर में वैश्वीकरण के प्रभावों का प्रत्यक्ष अनुभव किया जा सकता है – चाहे वह उपभोक्ता-संस्कृति हो, कार्य-संस्कृति हो या जीवन-शैली में बदलाव हो। अतः दिल्ली का शहरी परिदृश्य युवा महिलाओं पर वैश्वीकरण के प्रभाव को समझने के लिए उपयुक्त प्रयोगशाला जैसा बन जाता है।

युवा महिलाओं के जीवन-स्तर की चर्चा केवल आय या उपभोग तक सीमित नहीं हो सकती। इसमें शिक्षा, स्वास्थ्य, आवास, परिवहन-सुविधाएँ, सामाजिक सुरक्षा, आत्मनिर्भरता, निर्णय-शक्ति, डिजिटल पहुँच, मनोरंजन के अवसर, लैंगिक समानता का अनुभव आदि अनेक आयाम शामिल हैं। इसी प्रकार कार्य-परिस्थितियों में रोजगार-अवसर, वेतन-स्तर, कार्य-घंटे, अवकाश, भेदभाव, यौन-उत्पीड़न, कार्य-तनाव, उन्नति के अवसर, कौशल-विकास इत्यादि पक्षों का समावेश होता है। वैश्वीकरण से जुड़ी प्रक्रियाएँ – जैसे निजीकरण, उदारीकरण, तकनीकी परिवर्तन, वैश्विक प्रतिस्पर्धा और आउटसोर्सिंग – इन सभी आयामों को किसी-न-किसी रूप में प्रभावित करती हैं। कई अध्ययनों में यह पाया गया है कि वैश्वीकरण ने उच्च शिक्षित, अंग्रेज़ी-जानकार और मध्यवर्गीय महिलाओं के लिए पेशेवर क्षेत्र में नए द्वार खोले हैं। वे आईटी, प्रबंधन, मीडिया, बैंकिंग, बीमा, रिटेल, विमानन आदि क्षेत्रों में बड़ी संख्या में प्रवेश कर रही हैं। इन नौकरियों से उन्हें अपेक्षाकृत अधिक आय, स्वायत्तता और पहचान मिलती है। परंतु इसके साथ-साथ अस्थायी अनुबंध, रात की शिफ्ट, लंबी यात्रा, औपचारिक और अनौपचारिक यौन-उत्पीड़न, पारिवारिक जीवन पर दबाव, विवाह और मातृत्व में देरी जैसी समस्याएँ भी उभर रही हैं।दूसरी ओर, निम्न-आय वर्ग की युवा महिलाएँ, जो घरेलू काम, निर्माण-कार्य, दुकानों, सलून, छोटे उद्योगों या असंगठित सेवा-क्षेत्र में कार्यरत हैं, वैश्विक प्रतिस्पर्धा के कारण अधिक अस्थिर परिस्थितियों में काम कर रही हैं। वे सामाजिक सुरक्षा से वंचित हैं, मजदूरी कम है और कार्य-घंटे अनियमित हैं। कुछ अध्ययनों ने यह भी संकेत दिया है कि वैश्वीकरण ने महिला-श्रम के अनौपचारिककरण और सस्ते श्रम के रूप में उपयोग की प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया है।

इन जटिल परिस्थितियों में यह आवश्यक है कि हम वैश्वीकरण को केवल आर्थिक दृष्टि से न देखकर, उसके लैंगिक आयामों का भी विश्लेषण करें। विशेष रूप से यह समझना ज़रूरी है कि दिल्ली जैसे महानगर में रहने वाली युवा महिलाएँ वैश्वीकरण को किस रूप में अनुभव करती हैं; उनके जीवन-स्तर और कार्य-परिस्थितियों में कौन-कौन से परिवर्तन आए हैं; वे इन परिवर्तनों को सकारात्मक, नकारात्मक या मिश्रित रूप से कैसे मूल्यांकन करती हैं; और किस वर्ग, शिक्षा-स्तर तथा पारिवारिक पृष्ठभूमि की महिलाओं को अपेक्षाकृत अधिक लाभ या हानि हुई है। इस अध्ययन की विशेषता यह है कि इसमें एक ही समय में दो प्रकार के संकेतकों का उपयोग किया गया है – (1) आर्थिक-भौतिक संकेतक, जैसे आय, उपभोग, रोजगार-अवसर और (2) सामाजिक-मनोगत संकेतक, जैसे आत्मनिर्भरता की भावना, कार्य-तनाव, परिवार-कार्य संतुलन और भविष्य के प्रति आश्वस्तता। साथ ही, थायमो क्विनोन/रासायनिक इत्यादि की तरह मात्रात्मक प्रयोगशाला-आधारित अध्ययन की बजाय यह मानवीय अनुभवों पर आधारित सामाजिक-विज्ञान का सर्वेक्षण-अध्ययन है। उपरोक्त पृष्ठभूमि में प्रस्तुत शोध वैश्वीकरण के स्त्री-केन्द्रित विश्लेषण में एक छोटा-सा योगदान देने का प्रयास है। अपेक्षा है कि इस प्रकार के सूक्ष्म स्तर के अध्ययन नीति-निर्माताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं और शोधकर्ताओं को यह समझने में सहायता करेंगे कि वैश्विक आर्थिक नीतियों के लाभ महिलाओं तक कैसे पहुँच रहे हैं और कहाँ परिवर्तन की आवश्यकता है।

1.1 उद्देश्य

दिल्ली के शहरी क्षेत्रों में रहने वाली युवा महिलाओं के जीवन-स्तर एवं कार्य-परिस्थितियों पर वैश्वीकरण के सकारात्मक और नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना।

2. शोध-पद्धति

2.1 शोध-रूप

यह अध्ययन वर्णनात्मक सर्वेक्षण शोध-रूप पर आधारित है। इसका उद्देश्य किसी भी प्रकार की हस्तक्षेपात्मक क्रिया किए बिना वर्तमान स्थिति का निरूपण करना है।

2.2 अध्ययन-क्षेत्र

अध्ययन दिल्ली के प्रमुख शहरी क्षेत्रों – उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम और नयी दिल्ली – के वाणिज्यिक व आवासीय इलाकों में किया गया।

2.3 ब्रह्मांड (Population)
ब्रह्मांड में 18–35 वर्ष आयु वर्ग की वे सभी महिलाएँ शामिल मानी गई जो इन शहरी क्षेत्रों में निवास करती हैं और किसी न किसी प्रकार के वेतनभोगी या स्वरोज़गार कार्य से जुड़ी हैं।

2.4 नमूना आकार
कुल 150 युवा महिलाओं का नमूना चुना गया।

2.5 नमूना चयन की विधि
बहु-स्तरीय नमूना पद्धति अपनाई गई –

1. *प्रथम स्तर:* दिल्ली के पाँच शहरी ज़ोन (उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, नयी दिल्ली) का चयन उद्देश्यपूर्ण (purposive) ढंग से किया गया ताकि शहर के विविध सामाजिक-आर्थिक वातावरण का प्रतिनिधित्व हो सके।
2. *द्वितीय स्तर:* प्रत्येक ज़ोन से प्रमुख वाणिज्यिक/संस्थागत क्षेत्रों (जैसे कार्यालय-समूह, मॉल, बाजार, कॉल-सेंटर, अस्पताल, शैक्षणिक संस्थान) और आवासीय कॉलोनियों का चयन किया गया।
3. *तृतीय स्तर:* चयनित क्षेत्रों में काम करने या रहने वाली 18–35 वर्ष की उन महिलाओं का सुविधाजनक/आकस्मिक नमूना *(convenience sampling)* लिया गया जो अध्ययन में भाग लेने के लिए सहमत थीं। प्रत्येक ज़ोन से लगभग समान संख्या में उत्तरदात्री ली गईं ताकि क्षेत्रीय असंतुलन न रहे।

2.6 डेटा संग्रह के उपकरण/ डेटा विश्लेषण

1. *संरचित प्रश्नावली* – बंद और खुले दोनों प्रकार के प्रश्नों वाली। इसमें निम्न भाग थे:
    - व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जानकारी
    - शिक्षा, नौकरी/व्यवसाय, आय, कार्य-घंटे
    - वैश्वीकरण से जुड़े अनुभव (विदेशी कंपनियों से रोजगार, विदेशी उत्पादों का उपयोग, मीडिया-संपर्क आदि)
    - जीवन-स्तर और कार्य-परिस्थितियों से संतुष्टि से संबंधित कथन (5-बिंदु लिकर्ट स्केल – "पूरी तरह सहमत" से "पूरी तरह असहमत" तक)।

2. *अर्द्ध-संरचित साक्षात्कार* – कुछ चयनित उत्तरदात्रियों से गहन साक्षात्कार लेकर गुणात्मक डेटा एकत्र किया गया, जिससे मात्रात्मक निष्कर्षों की व्याख्या समृद्ध हो सके। प्रश्नावली से प्राप्त सूचनाओं का कूटांकन कर SPSS/Excel में प्रविष्ट किया गया। आवृत्ति, प्रतिशत, माध्य आदि वर्णनात्मक आँकड़ों का उपयोग किया गया। इस शोध-पत्र में मुख्य रूप से प्रतिशत विश्लेषण और सारणीय प्रस्तुति दी गई है।

3. परिणाम

सारणी–1 : उत्तरदात्रियों की आयु-वितरण

आयु-समूह (वर्ष)	संख्या	प्रतिशत
18–24	60	40.0%
25–30	55	36.7%
31–35	35	23.3%
कुल	**150**	**100%**

सारणीय आँकड़ों से स्पष्ट है कि सर्वाधिक उत्तरदात्रियाँ 18–24 वर्ष के आयु-समूह से थीं (40%), जबकि 31–35 वर्ष की महिलाओं का अनुपात 23.3% रहा। इसका अर्थ है कि नमूने में उच्चतर शिक्षा प्राप्त कर रोजगार-जगत में नए-नए प्रवेश करने वाली युवतियाँ अधिक हैं। ये वही आयु-समूह है जिस पर वैश्वीकरण की नई कार्य-संस्कृति और उपभोक्ता-संस्कृति का सबसे तीव्र प्रभाव माना जाता है।

सारणी–2 : वैश्वीकरण के प्रभाव के प्रति सहमति (N = 150)

क्र.	कथन	सहमत/आंशिक सहमत	असहमत/आंशिक असहमत	अनिश्चित
1	वैश्वीकरण से मेरे जीवन-स्तर में सुधार हुआ है।	96 (64.0%)	30 (20.0%)	24 (16.0%)
2	वैश्वीकरण से रोजगार-अवसरों में वृद्धि हुई है।	102 (68.0%)	28 (18.7%)	20 (13.3%)
3	वैश्वीकरण ने काम का तनाव और दबाव बढ़ा दिया है।	110 (73.3%)	20 (13.3%)	20 (13.3%)
4	वैश्वीकरण से परिवार-कार्य संतुलन बिगड़ा है ।	90 (60.0%)	35 (23.3%)	25 (16.7%)

1. *जीवन-स्तर में सुधार*
   लगभग 64% उत्तरदात्रियाँ इस बात से सहमत हैं कि वैश्वीकरण के परिणामस्वरूप उनका जीवन-स्तर सुधरा है; वे बेहतर वेतन, विविध उपभोक्ता-सामग्रियों, मनोरंजन साधनों और तकनीकी सुविधाओं तक पहुँच बना पाई हैं। केवल 20% महिलाएँ इससे असहमत थीं, जिनमें अधिकांश निम्न-आय वर्ग की थीं।
2. *रोजगार-अवसरों में वृद्धि*
   68% ने माना कि वैश्वीकरण के कारण रोजगार-अवसर बढ़े हैं – विशेषकर कॉल-सेंटर, रिटेल, बैंकिंग, आईटी-सर्विस, निजी स्कूल/कॉलेज आदि में। यह प्रभाव विशेष रूप से स्नातक/स्नातकोत्तर शिक्षित और अंग्रेज़ी-जानकार युवतियों में अधिक स्पष्ट दिखा।
3. *काम का तनाव एवं दबाव*
   73.3% उत्तरदात्रियों ने स्वीकार किया कि उनकी नौकरी पहले की तुलना में अधिक तनावपूर्ण हो गई है। लक्ष्य-आधारित कार्य, देर तक काम, रात की शिफ्ट, प्रतिस्पर्धा और नौकरी खोने का डर इसके प्रमुख कारण बताए गए। कई महिलाओं ने बताया कि मोबाइल और इंटरनेट के कारण "ऑफिस-टाइम" सीमित नहीं रहा; नियोक्ता किसी भी समय काम का संदेश भेज देते हैं।
4. *परिवार-कार्य संतुलन*
   60% महिलाओं ने महसूस किया कि वैश्वीकरण से परिवार-कार्य संतुलन चुनौतीपूर्ण हो गया है। विशेष रूप से विवाहित और बच्चों वाली युवतियों ने कहा कि लंबी दूरी की यात्रा, ओवर-टाइम और छुट्टी-के-दिन काम के कारण वे परिवार को पर्याप्त समय नहीं दे पातीं। 23.3% महिलाएँ असहमत थीं; उनका कहना था कि संयुक्त परिवार, घरेलू सहायक या लचीली नौकरी होने से वे संतुलन बना पाती हैं।

समग्र रूप से देखा जाए तो उत्तरदात्रियाँ वैश्वीकरण को "मिश्रित अनुभव" के रूप में भावित करती हैं – आर्थिक अवसर और जीवन-स्तर में सुधार के साथ-साथ कार्य-तनाव और पारिवारिक जीवन पर दबाव दोनों मौजूद हैं।

4. निष्कर्ष

अध्ययन से निम्न प्रमुख निष्कर्ष निकलते हैं –

1. दिल्ली के शहरी क्षेत्रों की युवा महिलाएँ वैश्वीकरण से पूर्णतः अनभिज्ञ नहीं, बल्कि उसके केंद्र में स्थित हैं। वे उच्च शिक्षा, आधुनिक रोजगार-क्षेत्रों और उपभोक्ता-संस्कृति से सीधे जुड़ी हैं।
2. अधिकांश उत्तरदात्रियाँ मानती हैं कि वैश्वीकरण ने उनके जीवन-स्तर और रोजगार-अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि की है। बढ़ी हुई आय, स्वयं की पहचान, स्वतंत्र निर्णय-शक्ति और आधुनिक सुविधाओं तक पहुँच को वे सकारात्मक रूप से देखती हैं।
3. साथ ही, वैश्वीकरण से उत्पन्न कार्य-तनाव, नौकरी की असुरक्षा और परिवार-कार्य संतुलन की समस्या को वे गंभीर चुनौती के रूप में अनुभव करती हैं। इस प्रकार आर्थिक सशक्तिकरण के साथ-साथ मानसिक-भावनात्मक दबावों की नई परतें भी जुड़ रही हैं।
4. थायमो क्विनोन जैसे वैज्ञानिक अध्ययनों की तरह यहाँ प्राप्त निष्कर्ष भी यह संकेत देते हैं कि कोई एक मात्रक (जैसे आय या नौकरी) जीवन-स्तर और कल्याण को पूरी तरह नहीं समझा सकता। महिलाओं के अनुभव बहुआयामी हैं; इसलिए गुणवत्ता-पूर्ण रोजगार, सामाजिक सुरक्षा, लचीली कार्य-नीतियाँ, सुरक्षित सार्वजनिक स्थान और स्त्री-पुरुष समान जिम्मेदारी वाले पारिवारिक ढाँचे की आवश्यकता है।
5. नीतिगत स्तर पर यह आवश्यक है कि श्रम-कानूनों, मातृत्व लाभ, crèche-सुविधाओं, लचीले कार्य-समय, सुरक्षित परिवहन और लैंगिक संवेदनशील कार्य-संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए, ताकि वैश्वीकरण के लाभ युवा महिलाओं तक न्यायोचित ढंग से पहुँच सकें और उसके नकारात्मक प्रभाव न्यूनतम हों।

संदर्भ सूची

देसाई, नीरा (2005). भारतीय समाज में स्त्री. नयी दिल्ली: ओरिएंट ब्लैकस्वान।
शर्मा, उषा (2010). वैश्वीकरण और भारतीय महिला-श्रम. जयपुर: रावत पब्लिकेशन।
सेन, गीता (2000) वैश्वीकृत अर्थव्यवस्था में लैंगिक श्रम। सामाजिक वैज्ञानिक, 28 (3-4) 45-66।
स्टैंडिंग, गाय (1999) लचीले श्रम के माध्यम से वैश्विक नारीकरण। विश्व विकास, 27 (3) 583-602।
भारत सरकार (2011) भारत की जनगणनाः प्राथमिक जनगणना सार, दिल्ली। भारत के महापंजीयक।
राष्ट्रीय महिला आयोग (2018) शहरी भारत में महिला और रोजगारः स्थिति और मुद्दे। नई दिल्ली।